विषय : मैं कब तक हँस सकूँगा ....
बीमारी नहीं मिट पायेगी हँसी

सना गाड़ी से भरा दिल्ली शहर। वहाँ एक अमीर परिवार खुशी से जी रहा था। माँ, बाप और उनके लाडली बेटी। उसकी नाम है रोशनी। बाप मनोज एक पुलीस आफीसर थे। और माँ राणी शहर की मशहूर डॉक्टर थी। रोशनी की माँ, बाप दूसरें गरीब लोगों का मदद करना नहीं पसंद करते थे। पर रोशनी ऐसा नहीं थी। रोशनी सिर्फ अपनी माँ, बाप की नहीं बल्कि वह स्कूल में भी सबकी लाडली थी। उसकी अध्यापकों, दोस्तों सब उसे बहुत पसंद करती थी। वह पाँचवीं कक्षा में पढती थी। जो अवसर उसको अपनी माँ, बाप नहीं दिया, वह अवसर उसको अपनी स्कूल के द्वारा मिलती थी। दूसरों का मदद करने का अवसर। इसलिए रोशनी अपनी स्कूल को बहुत प्यार करती थी। वह शेतान थी और अच्छी से पढती थी। हर दिन रोशनी पहली स्कूल में पहूँचती थी। और दिन में पहले हँसी भी सबको रोशनी से मिलती थी।

"रोशनी घर में सब कैसे हो?" उसकी दोस्त मीनू पूछा।
"सब ठीक हूँ।" मुस्कराते हुए कहाँ। और रोशनी कहाँ
"मुझे तुमसे एक बात बताना है मीनू"।
"क्या बात है, रोशनी?"
"तुझे पता है, मेरी माँ और बाप मुझे हमेशा दूसरों के मदद करने से रोकता है।"
"क्यूँ?" हाँसते हुए पूछा।
"मज़ाक नहीं है। सच में, वह लोग बहुत स्वार्थी है।"
"माँ, बाप के बारे में ऐसा नहीं कहता है रोशनी।"
मीनू थोड़ी गुस्सा से कहा। फिर स्कूल में दोनों अपने अपने कक्षा में चल गयी।

रात में रोशनी घर जाकर इस बारे बहुत सोचा। वह हमेशा सोचती थी कि अगर वो और उसकी परिवार अमीर नहीं तो...। और ये बात अपने माँ-बाप से पूछती थी। वह दोनों उसकी ये सवाल सिर्फ एक मज़ाक समझते थे। अचानक एक दिन उसको ये खबर मिलती थी उसकी स्कूल में पढते एक बच्चे के पापा बीमार है। और स्कूल में सब उनको सहाय करने केलिए कुछ पैसे जमाकर देनेकेलिए

सोचा। उस दिन रोशनी घर आकर अपनी माँ-बाप से पैसा माँगी। तब उन्होंने मना किया। और जब बात पता चला तब गुस्सा भी हुआ। और रोशनी से बहुत बुरी तरह बात की। अगले दिन जब सब पैसे लेकर आयी, तब रोशनी को बहुत दुःख हुआ। उसने घर में हुई सारी बात अपनी अध्यपिका से कहा और उन्होंने साँत्वना दी। हर दिन सबको हँसाती रोशनी उस दिन उदास थी। और उस उदासी जल्दी से मिट गयी, जब उसने मंदिर जाकर प्रार्थना किया।

बहुत दिन बात जब सब बच्चे स्कूल के असंबिल्ली में थे तब रोशनी अचानक गिर गयी। उसकी अध्यापकों उसे जल्दी आस्पताल लेकर गया। कुछ देर बात वहाँ उसकी माँ-बाप आया। तब अध्यापकों को स्कूल वापस जाना पडा। रोशनी की माँ-बाप डॉक्टर से मिली तब उन्होंने बताया कि रोशनी एक बहुत खतरनाक बीमार से गुज़ार रही थी। और रोशनी अब बीमार के आख़िरी स्टेज पर हैं। ये बात सुनकर शाणी टूट गयी। उन्होंने और टूट गयी तब ये बात सुनकर कि अब रोशनी की जान इलाज से नहीं बचा सकेगी।

फिर भी उसकी बाप उसे कई बड़ी आस्पताल में लेकर गया। सब लोग एक ही बात कहते रहते हैं कि अब कुछ नहीं कर सकेगा। रोशनी को अपनी बीमारी के बारे में पता थी। बहुत दिन के बात रोशनी स्कूल आया। सबकी आँखें उसे करुणा से देख रही थी। रोशनी को ये बहुत अजीब लगती थी। और उसने तय किया कि मैं हँस रहूँगी पहले का जैसा। मुझे पता नहीं कब तक? पर जब तक मैं जी रहूँगी, तब तक मेरी चेहरे में ये हँसी भी जी रहेगी। मुझे नहीं पता ये बीमार मुझे क्यूँ आया। पर मुझे ये पता है कि मैं किसी भी परिस्थितीमें नहीं बदलेगी। मेरी यह हँसी है मुझे मैं बनाते हैं। इसलिए मैं ये हँसी को हमेशा अपना साथ रखोगी। रोशनी पहले से ज़्याद हँस कर अब स्कूल में जा रही थी। ओर रोशनी के माँ-बाप को ये बात समझ आया कि पैसा से कुछ नहीं होता। पैसे को अपनी खुशियाँ से ज़्यादा मोल नहीं रहना चाहिए।

बहुत दिन हो गया। रोशनी अपनी हँसी को अपनी शक्ति बनकर जी रही है। और उसकी माँ-बाप अब गरीब लोगों को हाथ देकर उनका सहाय

बनकर जी रहा है तीनों हर हफ्ते में अपना एक दिन सबकी सहायता करने केलिए रखा है। रोशनी की माँ-बाप ऐसे लोगों को तलाश करते उनको सहाय देना देखकर अब रोशनी बहुत खुश है। रोशनी को अब उसकी चाहत का जैसा माँ-बाप मिली है। वह बहुत खुश हूँ। कभी-कभी रोशनी अपनी बीमार को ईश्वार का एक वरदान भी समझती है। आखिर इस बीमारी की वजह से उसे अपनी सपना का जैसा परिवार मिला। रोशनी उसकी हँसी से अब भी सबकी चेहरे में हँसी लाती रहती।

* * * * *

हम किसी भी परिस्थिती में किसी की वजह से भी बतलना नहीं चाहिए। हमेशा हमें हमपर विश्वास होना चाहिए। और हर स्थिती को हँसी से लटना चाहिए। हमसे जुडे हुए एक-एक बात है हमें हम बनाता है। और पैसे सिर्फ जीने केलिए एक सहारा है। अमीर होने से खुश या अहंकार और गरीब होने से दुःख नहीं रहना चाहिए। पैसे को कभी हमारी

खुशी और रिश्तों से बढकर नहीं रहना चाहिए। आदमी पैसे से नहीं दूसरों केलिए प्यार और करुणा से अमीर बनता है। पैसे एक दिन हमारे हाथ से निकल जाएगा पर प्यार से बनाया रिश्ता कभी टूट नहीं जाएगा। हमेशा दूसरों के सहाय बनकर जीना चाहिए।

* * * * *